B.Ed 1st year

(21-23) सामाजिक विकास (इरिक्सन के संदर्भ में) 1

* बालक का सामाजिक विकास (Social Development of child) :

Introduction : मनुष्य एक सामाजिक प्राणि है परन्तु जन्म के समय बालक सामाजिक नहीं होता है जैसे-जैसे बालक का शारीरिक और मानसिक विकास होता जाता है बालक में समाजीकरण की भावना विकसित होने लगती है।

अतः बालक का समाजीकरण शैशवावस्था से आरंभ हो जाता है और इसी प्रक्रिया के साथ बालक का समाजीकरण होने लगता है। इसप्रकार व्यक्ति का संपूर्ण जीवन इसी समाजीकरण की प्रक्रिया से होकर गुजरता है।

*** सामाजिक विकास का अर्थ : (Meaning of social Development)** सामाजिक विकास से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसमें बालक सामाजिक परम्पराओं और रूढ़िगत मान्यताओं के अनुरूप व्यवहार करता है, साथ ही साथ समाज में अन्य लोगों से सहयोगात्मक व्यवहार रखते हुए अपने जीवन के लक्ष्यों तक पहुँचता है।

इसप्रकार व्यक्ति का संपूर्ण विकास समाज में ही होता है तथा इसी समाज में वह अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करता है और सामाजिक गुणों को ग्रहण करता है। अतः धीरे-धीरे वह सामाजिक आदर्शों तथा प्रतिमानों का अनुकरण करना सीखता है जो जीवन-पर्यंत चलती रहती है।

* बालक के सामाजिक विकास की परिभाषा :

*** हरलॉक के अनुसार :** "सामाजिक विकास का अर्थ सामाजिक संबंधों में परिपक्वता को प्राप्त करना है।"

* **सोरेन्सन के अनुसार :** "सामाजिक अभिवृद्धि और विकास का तात्पर्य है - अपनी और दूसरों को उन्नति के लिए योग्यता वृद्धि।"

* **रॉस के अनुसार :** "सहयोग करने वाले लोगो में हम की भावना का विकास और उनके साथ काम करने की क्षमता का विकास तथा संकल्प ही सामाजिक विकास कहलाता है।"

* **सामाजिक विकास की प्रकृति : (विशेषताएं)**

(1) इसमें बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है

(2) समाज के अन्य लोगों के संपर्क में आने से बालक में अनुकरण की भावना के साथ उसके वास्तविक व्यवहार में परिवर्तन होता है

(3) वह समाज के परम्पराओं और मान्यताओं के अनुकूल अपना विकास करता है

(4) इसमें बालक के सामाजिक अभिवृत्तियों और असामाजिकता की भावना का भी विकास होता है

(5) यह बालक - बालिकाओं में अंतर करते हुए सभी कार्यों का निर्धारण करता है।

(6) इसमें बालको में अनुकरण, सामाजिक समायोजन की भावना तीव्र गति से विकसित होता है।

(7) बालक में सामाजिक मूल्यों एवं आदर्शों के अनुरूप व्यवहार करने की क्षमता का विकास होता है।

* बालक के विभिन्न अवस्थाओं में सामाजिक विकास :

- (1) शैशवावस्था में सामाजिक विकास (Social Development During Infancy) :
- (2) बाल्यावस्था में सामाजिक विकास (Social Development During Childhood)
- (3) किशोरावस्था में सामाजिक विकास (Social Development During Adolescence)

(1) शैशवावस्था में सामाजिक विकास :

जन्म के समय शिशु न,ही सामाजिक होता है और न ही असामाजिक बल्कि वह एक अबोध एवं असहाय के रूप में रहता है। परन्तु जैसे-जैसे उसकी आयु बढ़ती जाती है उसका शारीरिक एवं मानसिक विकास होने लगता है तथा परिवार एवं समाज के संपर्क में रहने से उनमें सामाजीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। जिसे निम्न तालिका के माध्यम से समझा जा सकता है-

आयु - अवधि	सामाजिक - व्यवहार
→ 1 माह	रोना, हँसना, नेत्रों को घुमाना।
→ 2 माह	आवाज पहचानना, सिर घुमाना, हँसना इत्यादि।
→ 3 माह	परिवार के अन्य सदस्यों को पहचानना।
→ 4 माह	शिशु के साथ बोलने पर खेलता है, दूर जाने पर रोता है।
→ 5 माह	प्रेम और क्रोध में अंतर समझने लगता है।
→ 8 माह	बोले जाने वाले शब्दों का अनुकरण करना

1 year	मना किये जाने वाले कार्यों को नहीं करना।
2 years	बड़ों का अनुकरण
2-3 years	सामाजिक विकास तीव्र गति से होना
4-5 years	विद्यालय में प्रवेश लेना, नवीन सामाजिक संबंध स्थापित करना।
5-6 years	(शिशु) बालक में नैतिक भावना का विकास।

* बाल्यावस्था में सामाजिक विकास :

बाल्यावस्था में समाजीकरण की प्रक्रिया तीव्र गति से होने लगती है अर्थात् अनुकूलन, समायोजन तथा समाजिक भावना विकसित होने लगती है जिसे निम्न बिंदुओं के द्वारा समझा जा सकता है —

(1) बालक विद्यालय में नये वातावरण से अनुकूलन करता है, सामाजिक कार्यों में भाग लेता है तथा नये-नये मित्र बनाता है।

(2) वह अपने माता-पिता या अन्य परिवार के सदस्यों के साथ कम से कम समय बिताना चाहता है इस अवस्था में बालक अपने मित्रों के साथ खेलने-कूदने में ज्यादा आनंद का अनुभव करता है।

(3) बालक समाज में अपने मित्र-समूहों के प्रति गहरी भक्ति-भाव रखने लगता है जिससे प्रायः माता-पिता को समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

(4) समाजीकरण की प्रक्रिया में बालक-बालिकाओं के अंदर अनेक सामाजिक गुणों का विकास होता है। जैसे - उत्तरदायित्व, सहयोग, साहस, सहनशीलता, न्यायप्रेम आत्म-निर्भरता इत्यादि।

(5) बाल्यावस्था में बालक में अपने समूहों के प्रति नेतृत्व जैसे गुणों का विकास आरंभ हो जाता है।

(6) इस अवस्था में बालक में खेल प्रवृति विकास तीव्र गति से होता है। सहयोग के साथ खेलना तथा सामाजिक नियमो का पालन करना सीख जाता है।

* किशोरावस्था में सामाजिक विकास :- (Social Development in Adolescence)

किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था है जिसमें बालकों के शारीरिक एवं मानसिक विकास में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलता है। ये सभी परिवर्तन बालक के सामाजिक विकास को प्रभावित करते है - जब बालक शैशवावस्था और बाल्यावस्था को पारकर किशोरावस्था में प्रवेश करता है तब वह अन्य व्यक्तियों के सामाजिक संबंधो एवं परिस्थितियों के साथ समायोजन करने का प्रयास करता है इस प्रकार उसमें निम्नलिखित सामाजिक विशेषताएँ दिखाई देने लगती है -

→(i) लिंग संबंधि चेतना
→(ii) जोड़ा - समूह (Peer Group)
→(iii) सामाजिक रुचि
→(iv) सामाजिक जागरूकता
→(v) नेतृत्व
→(vi) विद्रोह की भावना
→(vii) राजनैतिक दलों का प्रभाव
→(viii) व्यवसाय-चयन में रुचि

(i) लिंग-संबंधि चेतना :- किशोरावस्था में लिंग-संबंधि चेतना तीव्र हो जाती है जिसके फलस्वरूप लड़के-लड़कियाँ एक-दूसरे के प्रति आकर्षण की भावना रखने लगते है उनका हाव-भाव, वेष-भूषा तथा अपने शरीर के प्रति ज्यादा ध्यान देना जैसी, भावनाएं विकसित होने लगती है।

(2) **वय-समूह या जोड़ा समूह** :- इस अवस्था में वे अपने समूह के प्रति असीम भक्ति-भाव लिए रहता है वे अपने मित्रों तथा समूहों के विचार, व्यवहार उनकी आदतों को अपनाने का प्रयास करता है। इस अवस्था में वे अपने माता-पिता और अध्यापकों के प्रति संघर्ष की भावना रखते है।

(3) **सामाजिक रुचि** :- इस अवस्था में लड़के-लड़कियां सामाजिक-सांस्कृतिक समारोहो, पार्टियों या अन्य आयोजनों में बढ़चढ़कर हिस्सा लेते है विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर चर्चा करना या उसमें भाग लेना उन्हे रुचिकर लगता है।

(4) **सामाजिक जागरुकता** :- किशोरावस्था में सामाजिक जागरुकता का विकास तीव्र गति से होता है, वे इस अवस्था में ऐसा कार्य करना चाहते है जिसमें उन्हें अपने माता-पिता या शिक्षकों से प्रशंसा मिले। साथ ही उनकी आवश्यकताएं पूरी न होने पर या उनकी रुचियों के विरुद्ध जाने पर विद्रोह भी करते है तथा उनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है

(5) **नेतृत्व (Leadership)** :- किशोरावस्था में बालक-बालिकाओं में प्रभावी नेतृत्व का विकास होने लगता है। वे अपने समूह साथियों में विभिन्न कार्यक्रमों, समारोहो और कक्षाओं में नेतृत्व की भावना विकसित करते हुए एक नेता की भूमिका में आ जाते है।

(6) **विद्रोह की भावना (Feeling of Revolt)** :- किशोरावस्था में बालक-बालिकाएं अपने माता-पिता शिक्षकों या अन्य बड़े लोगों के विचारों से सहमत नहीं होते तथा उनकी बातों का विद्रोह करने लगते है। उनके अभिभावकों द्वारा उनकी स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाने या उन्हें अनुशासन अपनाने के लिए कहने पर इनमें विद्रोह की भावना उत्पन्न हो जाती है।

(7) राजनैतिक दलों का प्रभाव (Influence of political Parties) :-

किशोरावस्था में बालक - बालिकाएं विभिन्न राजनीतिक पार्टियों में रुचि लेने लगते हैं, वे विभिन्न दलों की विचारधाराओं से प्रभावित होकर उस दल के अनुरूप कार्य करने लगते हैं।

(8) व्यवसाय में रुचि (Interest in selection of vocation) :

किशोर अपने भविष्य के बारे में तरह-तरह की योजनाएं बनाने तथा विभिन्न व्यवसायों के लिए या नौकरियों के लिए अलग-अलग क्षेत्रों का चयन करने लगते हैं साथ ही अपने बड़ों से विचार-विमर्श तथा मार्गदर्शन लेते हुए अपने सामाजिक विकास और अग्रसर होते हैं।

* सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :

→ अनुवांशिकता
→ परिवार
→ साथियों का समूह
→ विद्यालय
→ अध्यापक
→ संवेगात्मक विकास
→ शारीरिक तथा मानसिक विकास
→ पास-पड़ोस
→ आर्थिक-स्थिति
→ धार्मिक संस्थायें और क्लब

* बालकों के सामाजिक विकास में शिक्षकों की भूमिका :

(1) शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच घनिष्ठ संबंध होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों में नैतिकता तथा समाजिकता की भावना सिख सके।

(2) शिक्षकों द्वारा विद्यालयों में विभिन्न पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना चाहिए जिसमें छात्रों को सामूहिक

जीवन का अनुभव प्राप्त हो।

(3) शिक्षको को छात्रों में अनुशासन, सहनशीलता सहयोग तथा देश-प्रेम जैसी भावना का विकास करना चाहिए। जिससें छात्र आदर्श नागरिक बन सके।

(4) शिक्षकों को विद्यार्थियों के माता-पिता या अभिभावको से संपर्क स्थापित कर विद्यार्थियों की रुचियों, मनोवृत्तियों आदि को समझकर उचित मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए।

(5) शिक्षकों को सामूहिक खेलो, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का विद्यालयों में समय-समय पर आयोजन करना चाहिए जिससे छात्रों में समाजीकरण की भावना विकसित हो सके।

0